[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 5623 G

Unique Paper Code : 12051102

Name of the Paper : Hindi Kavita (Adikal evam Bhaktikaleen Kavya)

Name of the Course : **Hindi (Hons.)**

Semester : I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

1. 'अमीर खुसरो भारतीय लोकजीवन के चितेरे हैं।' विवेचना कीजिए।

अथवा

'विद्यापति ने राधा कृष्ण के प्रेम का हृदयस्पर्शी वर्णन किया है।' उनके पदों के आधार पर सिद्ध कीजिए। (12)

2. कबीर की साहित्यिक विशेषताएं लिखिए।

अथवा

सूफी काव्य परम्परा में मधुमालती का स्थान निर्धारित कीजिए।

(12)

P.T.O.

3. उद्धव सन्देश के आधार पर सूरदास के विरह वर्णन की विशेषताएँ बताइए।

अथवा

मीरा के काव्य में निहित विद्रोह चेतना को स्पष्ट कीजिए। (12)

4. कवितावली के आधार पर तुलसीदास की भक्ति भावना का सोदाहरण विवेचन कीजिए।

अथवा

तुलसीदास के काव्य सौंदर्य की विशेषताएँ बताइए। (12)

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) गोरी सोवै सेज पर, मुख पर डारे केस।
चल खुसरो घर आपने, रैन भई चहुँ देस।।
खुसरो रैन सुहाग की, जागी पी के संग।
तन मेरो मन पीउ को, दोउ भए एक रंग।।

अथवा

जहाँ-जहाँ पद-जुग धरई। तहिं-तहिं सरोरुह झरई।।
जहाँ-जहाँ झलकए अंग। तहिं-तहिं बिजुरि-तरंग।।
कि हेरलि अपरुब गोरि। पइठलि हिअ मधि मोरि।।
जहाँ-जहाँ नयन विकास। ततहिं कमल प्रकास।।
जहाँ लहु हास संचार। तहिं-तहिं अमिअ-बिथार।।
जहाँ-जहाँ कुटिल कटाख। ततहिं-मदन-सर लाख।। (8)

(ख) सूते स्याम सेत औ राते। लागत हिएँ निफरि ही जाते
चपल बिसाल तीख अति बाँके। खंजन पलक-पंख सेउं ढाँके।
पारधि जनु अगनित जिउ हरे। पौढ़ें धनुक सीस तर धरे।
सनमुख मीन केलि जनु करहीं। कै जनु दुइ खंजन उड़ि लरहीं।
दुवो नैन जिय के बियाधा। देखत उठै मरै के साधा।

अथवा

हेरी म्हा तो दरद दिवाणां म्हारॉं दरद न जाण्यां कोय।।
घायल री गत घायल जाणयां, हिवड़ों अगण संजोय।
जौहर की गत जौहर जाणै, क्या जाण्यां जिण खोय।
दरद की मारयां दर दर डोल्यां वैद मिल्या णा कोय।
मीरां री प्रभु पीर मिटाँगां जव वेद सांवरो होय।। (7)

6. निम्नलिखित पद्यांशों में दिए गए निर्देश के अनुसार किन्हीं दो का रचना कौशल विश्लेपित कीजिए : (6×2=12)

(क) मेरो मन अनत कहां सुख पावै।
जैसे उड़ि जहाज कौ पंछी, फिरि जहाज पै आवै।।
कमलनैन कौ छांड़ि महातम और देव कौ ध्यावै।
परम गंग कों छांड़ि पियासौ दुर्मति कूप खनावै।।
जिहिं मधुकर अंबुज-रस चाख्यौ, क्यौं करील-फल भावै।
सूरदास, प्रभु कामधेनु तजि, छेरी कौन दुहवै।।
(भाव सौंदर्य)

अथवा

सीस जटा, उर बाहु बिसाल, बिलोचन लाल, तिरीछीसी भौंहैं।
तून, सरासन, बान धरे, तुलसी बन-मारग में सुठि सोहैं।।
सादर बारहिं बार सुभाय चितै तुम त्यों* हमरो मन मोहैं।
पुँछति ग्रामवधू सिय सों "कही साँवरे से, सखि! रावरे को हैं"?।।

(रूप वर्णन)

(ख) अब का डरौं डर डरहि समाँनाँ, जब थैं मोर तोर पहिचाँनाँ।टेक।।
जब लग मोर तोर करि लीन्हां, भै भै जनमि जनमि दुख दीन्हा।।
अगम निगम एक करि जाँनाँ, ते मनवाँ मन माँहि समाना।।
जब लग ऊँच नीच कर जाँनाँ, ते पसुवा भूले भ्रँम नाँनाँ।
कहि कबीर मैं मेरी खोई, बहि राँम अवर नहीं कोई।।

(प्रतीकात्मकता)

अथवा

बहुत कठिन है डगर पनघट की।
कैसे मैं भर लाऊँ मधवा से मटकी
मेरे अच्छे निजाम पिया।
कैसे मैं भर लाऊँ मधवा से मटकी
ज़रा बोलो निज़ाम पिया।
पनिया भरन को मैं जो गई थी।
दौड़ झपट मोरी मटकी पटकी।
बहुत कठिन है डगर पनघट की।
खुसरो निज़ाम के बलि-बलि जाइए।
लाज राखे मोरे घूँघट पट की।

(भाषा सौंदर्य)